

## पद १५१

(राग: देस - ताल: दादारा)

देखो हर हर शिव शिव कहिले रे तुं जियरा । नहीं तेरा कछु, झूठी  
धन संपत् समजा है मेरा ॥ध्रु.॥ झूठा जग झूठी प्रीत झूठा है  
पसारा । एक साच माणिक गुरु साहेब है हमारा ॥१॥